

20. संगति

जिस प्रकार दीये से दीया जलता है, उसी प्रकार भलाई से भलाई फैलती है।

- गुरु :** भला विद्यार्थी स्कूल में समय से पहले क्यों आ जाया करते हैं ?
- शिष्य :** समय से पहले आकर विद्यार्थी खेलते हैं। घर पर वे अकेले होते हैं, इसलिए नहीं खेल सकते।
- गुरु :** जिनके साथ लड़के खेलते हैं उन्हें क्या कहते हैं ?
- शिष्य :** उन्हें साथी या 'आड़ी' कहते हैं।
- गुरु :** भला साथी किस-किस काम आता है ?
- शिष्य :** साथी हमारे साथ खेलते हैं, पढ़ते-लिखते हैं और सब कार्यों में हमारी सहायता करते हैं। बातचीत, खेलकूद और सैर-तमाशों में सम्मिलित होकर वे हमें आनन्दित करते हैं। हम सब मिल-जुलकर रहना चाहते हैं। यदि कोई आपत्ति आ जाए तो भी साथी हमारी सहायता करते हैं। हम उनकी सम्मति से काम करते हैं।
- गुरु :** भला यह भी जानते हो कि साथी और मित्र में क्या भेद है ?
- शिष्य :** यह आप बता दीजिए।
- गुरु :** साथी तो बहुत से होते हैं, परन्तु मित्र कोई-कोई होता है। साथियों में से एक दो ही ऐसे होते हैं, जिन पर आप पूरा विश्वास कर सकते हैं। पर अपनी आपत्तियों की कहानी उन्हें ही सुना सकते हैं जिनको मित्र कहते हैं। सच्चा मित्र वही है जो आपत्ति में काम आए। कहा भी है -
- सब को सब कोई कहे, कै सलाम कै राम।
हित 'रहीम' तब जीनियो, जब कुछ अटके काम॥
- शिष्य :** साथियों या मित्रों से क्या लाभ या हानि होती है ?
- गुरु :** अच्छे साथियों से लाभ होता है और बुरे साथियों से हानि होती है। हम अपने साथी अपने स्वभाव के अनुसार चुनते हैं। यदि हम अच्छा होना चाहते हैं, तो अच्छे साथी चुनेंगे और साथियों की बातें सीख कर हम भी वैसे ही बनते चले जाएंगे। जिस प्रकार गन्दे नाले स्वच्छ नदी को भी गन्दा बना देते हैं, उसी प्रकार यदि गन्दे साथी मिल जाएँ तो उनके प्रभाव से दूसरे साथी भी बिगड़ जाते हैं।
- शिष्य :** साथियों का प्रभाव किस-किस प्रकार पड़ता है ?
- गुरु :** 1. **बोल-चाल में** - जैसी भाषा साथी बोलते हैं वैसी ही हम बोलते हैं। अच्छे या गन्दे शब्द, गालियों या सभ्यता की बातें सब साथी से ही सीखते हैं। इसलिए ऐसे साथी बनाओ जिनकी भाषा शुद्ध हो।

2. **हमारे कार्यों में-** हम प्रत्येक कार्य में अपने साथियों की नकल उतारा करते हैं। कहावत है कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। इसी प्रकार हमारे सब काम-काज हमारे साथियों की तरह के होते हैं। यदि कोई साथी दूसरे साथियों से विपरीत व्यवहार करे तो दूसरे साथी उस पर हँसते हैं। वह दूसरों की निगाह में बजर-बटू नहीं बनना चाहता। इसलिए वह भी वैसा ही बनने का प्रयत्न करता है।

शिष्य : यदि साथी बुरा काम करने लगे, तो हमें क्या करना चाहिए।

गुरु : या तो उनको समझाओ, नहीं तो उनसे अलग बचे रहो। जैसे संस्कार हमारे होंगे वैसे ही हम कार्य करेंगे।

शिष्य : संस्कार क्या होते हैं ?

गुरु : जिस प्रकार हम कापी पर लिखते समय कापी की ऊपर की पंक्ति की नकल करते हैं, उसी प्रकार हम साथियों के कामों की नकल करते हैं और बार-बार ऐसा करने से हमारा स्वभाव वैसा ही बन जाता है। ये संस्कार बिना सोचे-समझे, जाने-अनजाने में पड़ते ही रहते हैं। कभी-कभी हमारे साथी भी हमें समझाते और सलाह देते रहते हैं और हम उसके अनुसार कार्य करते हैं।

शिष्य : मित्रों के चुनाव में किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?

गुरु : 1. कोई आदमी ऐसे घर में जाना पसन्द नहीं करता जहाँ दुर्गन्ध हो या छूत की बीमारी हो। इसी प्रकार जो विद्यार्थी झूठी शपथ खाने वाले, आलसी, निर्दयी और कुचाली हों, उनको अपना मित्र न बनाओ, नहीं तो उनका प्रभाव तुम पर भी पड़ेगा। सदा नेक और पवित्र साथियों से मित्रता रखो।

2. किसी दंभी या अभिमानी को साथी न बनाओ। प्रायः धनी लड़के धन के अभिमान में चूर होते हैं और गरीब लड़कों पर हँसा करते हैं। ऐसे लड़कों को साथी न बनाओ। ऐसे विद्यार्थियों को साथी बनाओ जो सब के साथ समान भाव से बर्ताव करें, चाहे वह निर्धन हों चाहे धनवान्।

शिष्य : साथियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए ?

गुरु : 1. यदि हमारे साथी अच्छे हों, तो साधारण-सी बात पर उनसे रूठ न जाओ। अपराध तो सभी से होता है। जो सदा अपने साथियों को बदलते रहते हैं, उनमें अवश्य कुछ दोष होता है।

2. साथियों में कुछ दोष हों, तो एकान्त में प्रेम से समझा दो। चुप मत रहो। इससे उनका दोष दूर हो जाएगा।

3. साथियों के साथ प्रेम और दयालुता का बर्ताव करो।

4. यदि साथियों में कुछ झगड़ा हो जाये तो उसे मिटाने का प्रयत्न करो। नहीं तो मित्रता टूट जाएगी और साथी पृथक-पृथक हो जायेंगे। हमें कटु वचन सुनकर भी झगड़ा मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए। शुद्ध शब्दों का प्रयोग करो और अपने अपराध मानने को तत्पर रहो।
5. स्वयं अच्छे बनो जिससे दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़े। नेक बात, नेक कार्य, पढ़ने-लिखने, खेल-कूद आदि में दूसरों की सहायता करो। जिसकी हम सहायता करते हैं वह हमारा जीवन भर का मित्र बन जाता है।

अभ्यास

1. साथियों की आवश्यकता किस-किस समय होती है ? उदाहरण दीजिए।
2. चाल-चलन तथा हमारे कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है ?
3. साथी और मित्र में भेद बताओ।
4. साथियों के चुनाव में किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?
5. धनी और पदाधिकारी को साथी बनाने में क्या लाभ या हानि है ?

